International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 35 March – April - 2026

हिंदी साहित्य और पर्यावरण - नई संकल्पनाएँ

वैशाली आण्णासाहेब आढाव

वृंदावन नगर राहुरी, ता. राहुरी जि. अहिल्यानगर

Corresponding Author – वैशाली आण्णासाहेब आढाव

DOI - 10.5281/zenodo.20485549

सार (Abstract):

हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चेतना का विकास भारतीय सांस्कृतिक और दार्शनिक परंपरा से गहराई से जुड़ा हुआ है। भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति को जीवन का अभिन्न अंग माना गया है। जहाँ मनुष्य और पर्यावरण के बीच संतुलन एवं सामंजस्य पूर्ण संबंध पर विशेष बल दिया गया है। प्रारंभिक हिंदी साहित्य में प्रकृति का चित्रण मुख्यतः सौंदर्य बोध और भावात्मक अनुभूति के रूप में किया गया। परंतु आधुनिक हिंदी युग में औद्योगीकरण, शहरीकरण और बढ़ते पर्यावरणीय संकटों के कारण साहित्यकारों ने पर्यावरण या समस्याओं को गंभीरता से उठाया है। यह शोध पत्र पर्यावरण के प्रति जागरूकता संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने के लिए प्रभावी सिद्ध होगा। हिंदी साहित्य के माध्यम से मानव और प्रकृति के मध्य संतुलित संबंध स्थापित करने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

मुख्य शब्द *(Keywords): पर्यावरण चेतना, हिंदी साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा, प्रकृति संरक्षण,पृथ्वी -मनुष्य -ईश्वर संबंध,आधुनिक युग,भावात्मक अनुभूति, सौंदर्य बोध।*

प्रस्तावना:

वर्तमान समय में पर्यावरण से जुड़ी समस्याएँ पूरी दुनिया के सामने एक गंभीर चुनौती के रूप में उभर रही है। औद्योगिकरण, शहरीकरण, प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध उपयोग के कारण प्रकृति का संतुलन लगातार बिगड़ जा रहा है। जल, वायु और भूमि प्रदूषण तथा जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का क्षरण, वनों का अनियंत्रित दोहन, भूमंडलीय तापवृद्धि, जैसी समस्याएँ मानव जीवन और पृथ्वी के भविष्य के लिए खतरा बन गई है। ऐसी स्थिति में परिस्थितिकी संतुलन, पर्यावरण संरक्षण और उसके प्रति जागरूकता बढ़ाना अत्यंत आवश्यक हो गया है। यह संकट केवल वैज्ञानिक एवं तकनीकी विमर्श तक ही सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक क्षेत्र को भी समान रूप से प्रभावित कर रहे हैं। समकालीन कवि और लेखक अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने का प्रयास कर रहे हैं। वे यह संदेश देते हैं कि, यदि हम प्रकृति का संतुलन बिगाड़ देंगे,तो वास्तविक विकास संभव नहीं होगा। आधुनिक तकनीक और औद्योगिक प्रगति ने एक और मानव जीवन को सुविधाजनक बनाया है,लेकिन दूसरी ओर इससे प्राकृतिक संतुलन भी प्रभावित हुआ है। मनुष्य का जीवन प्राकृतिक पाँच मूल्य तत्व पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु पर आधारित है। इन तत्वों का संतुलन और अस्तित्व मानव जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है। पर्यावरण के महत्व को समझाते हुए डा.राधावल्लभ उपाध्याय जी बताते हैं कि,- "मानव का विकास उसके दहिक, दैनिक एवं भौतिक कर्म एवं धर्म पूर्णतया पर्यावरण के ताने बाने से बने गए हैं। यहाँ

तक की मानव के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास में भी पर्यावरण का महत्वपूर्ण योगदान रहता है।"1

'साहित्य'और 'पर्यावरण' भले ही अर्थ की दृष्टि से भिन्न अवधारणाएँ प्रतीत होती हो, तथापि दोनों के मध्य गहरा और अभिभाज्य संबंध विद्यमान है। उनके अंतसंबंध मानवीय सभ्यता के विकास क्रम में निरंतर जीवंत और सक्रिय रहे हैं। मानव का अस्तित्व उसकी मूलभूत आवश्यकताएँ तथा सभ्यता का विकास प्रकृति पर ही आधारित है। अतः पर्यावरण संरक्षण मानव जीवन की अनिवार्य शर्त है। साहित्य मानवीय भावनाओं, संवेदनाओं तथा मूल्य का पोषक संरक्षक तथा संवाहक है, वहीं पर्यावरण उसे व्यापक व परिवेश का द्योतक है। जो मनुष्य को घेरता है, इसका निर्माण करता है। इस प्रकार साहित्य और पर्यावरण मनुष्य के आंतरिक तथा बाय दोनों आयामों को समन्वित रूप से संपोषित करते हैं।हिंदी साहित्य में पर्यावरण से जुड़ी नई संकल्पनाएँ,प्रकृति संरक्षण, परिस्थितिकी संतुलन और मानव प्रकृति संबंधों की नई व्याख्या पर आधारित है।

हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चेतना कोई नवीन अवधारणा नहीं है, अपितु वह आदिकाल से ही विविध रूपों में अधिक अभिव्यक्त होती रही है। हिंदी के कवियों और साहित्यकारों ने प्रकृति के किसी भी अवयव की अपेक्षा नहीं की है। चाहे वह नदी हो सरोवर, वन, वृक्ष, धरती या आकाश सभी को साहित्य में विशिष्ट रूप में रखा है। इतना ही नहीं साहित्यकारों ने पशु पक्षियों और समस्त जीव जगत को भी अपनी सृजन परिधि में समाविष्ट किया है। भारतीय परंपरा में पर्यावरण के प्रति गहरा आदर भाव रहा है। वायु, अग्नि, जल, आकाश, सूर्य, चंद्रमा, वनस्पति और जीव जंतुओं को पूज्य माना गया है। पीपल, नीम,तुलसी, वट आदि वृक्षों को तथा नदियों को पवित्र समझ गया है। प्रकृति के इन तत्वों के संरक्षण को धर्म से जोड़कर देखा गया, जिससे संतुलन बना रहा। आदिकाल से लेकर आधुनिक युग तक हिंदी साहित्य में प्रकृति को विशिष्ट और सम्मानित स्थान प्राप्त रहा है। पर्यावरणीय चेतना की यह समृद्ध परंपरा आज भी प्रासंगिक है।यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि, पर्यावरण है, तो मनुष्य है। और मनुष्य है, तो पर्यावरण है। दोनों एक दूसरे के पूरक एवं परंपरा आश्रित है। मनुष्य और पर्यावरण के घनिष्ठ संबंधों के बारे में अयोध्या सिंह उपाध्याय जी बताते हैं कि,-"कोई क्लान्ता कृषक ललना खेत में जो दिखावे, धीरे-धीरे बरस उसकी क्रांतियां को मिटाना जाते, कोई जलद यदि हो व्योम में तो उसे ला, छाया द्वारा सूचित करना तब तक भुवांगना को"2

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। इसलिए समकालीन साहित्यकोष ने भी पर्यावरण समस्याओं को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक के माध्यम से प्रकृति विनाश और पर्यावरण संकट का यथार्थ चित्रण किया जा रहा है। इसलिए साहित्य न केवल समाज की स्थिति का प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है, बल्कि चेतना और जागरूकता उत्पन्न करने का कार्य भी करता है। साहित्य में सदैव मानव को प्रकृति के प्रति अनुराग संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व का बोध कराया है। आधुनिक हिंदी साहित्य में वन, जल, भूमि तथा अन्य प्राकृतिक तत्वों का मार्मिक चित्रण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया है। पर्यावरण की निरंतर हो रही हानी को रोकने के लिए साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से पर्यावरण विनाश की वेदना और दुष्परिणामों को प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त किया है। उन्होंने मानव को अहंकार त्याग कर आत्मा अनुभूति और संवेदनशीलता के माध्यम से प्रकृति के साथ समन्वय स्थापित करने की प्रेरणा दी है।

प्रारंभिक हिंदी साहित्य विशेषता भक्तिकाल और रीतिकाल में प्रकृति का चित्रण मुख्यतः सौंदर्य श्रृंगार और आध्यात्मिक अनुभूति के संदर्भ में किया गया है। उस काल

के प्रमुख कवि जैसे सूरदास, तुलसीदास और मीराबाई ने अपनी काव्य रचनाओं में प्रकृति के विविध रूपों का मार्मिक एवं भावपूर्ण वर्णन किया है। उनके साहित्य में प्रकृति के प्रति आदर श्रद्धा और संवेदनशीलता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तथा 20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में औद्योगीकरण और शहरीकरण की तीव्रता ने सामाजिक संरचना के साथ-साथ पर्यावरण पर भी व्यापक प्रकाश डाला। परिणाम स्वरुप हिंदी साहित्यकारों ने अपने साहित्य में इन परिवर्तनों और उनके दुष्परिणामों को रेखांकित करना आरंभ किया। इस काल में साहित्य सामाजिक यथार्थ के प्रति अधिक सजग और उत्तरदायी बनकर उभरा।

20वीं शताब्दी के मध्यकाल में हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चेतना का स्पष्ट विकास दिखाई देता है। इस समय के प्रमुख साहित्यकार जैसे जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा ने प्रकृति के सौंदर्य के साथ उसके संरक्षण और संतुलन की आवश्यकता पर विशेष बल दिया संत कवियों ने प्रकृति को केवल काव्य सौंदर्य का उपकरण न मानकर जीवन सत्य के प्रतीक के रूप में चित्रित किया है। सुमित्रानंदन पंत जी प्रकृति को अत्यंत कोमल एवं संवेदनशील कवि माना है। उनकी अनेक रचनाओं में जैसे एक तारा, गुंजन, परिवर्तन, बादल, हिमाद्री और नौकाविहार में प्रकृति के विविध और सुंदर रूपों का अत्यंत सजीव चित्रण देखने को मिलता है। स्वयं पंत जी ने यह स्वीकार किया है कि, उनके काव्य रचना की प्रेरणा मुख्य रूप से प्रकृति के अवलोकन से ही उन्हें प्राप्त हुई।उन्होंने अपनी एक रचना में प्रकृति के बारे में बताया है कि,-" छोड़ द्रुमो की मृदु छाया,

जोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले तेरे बाल जाल में,
कैसे उलझा दूँ लोचन,
भूल अभी से इस जग को"[3]

पंत जी की जन्म भूमि कुर्माचल क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता ने उनके काव्य को विशेष रूप से प्रभावित किया है। भारतीय परंपरा में पर्यावरण का स्थान अत्यंत पूज्य एवं उच्च माना गया है।वैदिक वन में उपनिषद,पुराण तथा अन्य धर्म ग्रंथो में मानव और प्रकृति के सह अस्तित्व, सामंजस्य तथा संतुलन पर विशेष बल दिया गया है। यह दृष्टिकोण भारतीय जीवन दर्शन की मूल संवेदना का अंग है। और साहित्यिक अभिव्यक्तियों में भी गहराई से अंतर्निहित है। पर्यावरण के प्रति यह नैतिक एक आध्यात्मिक दायित्व बोध केवल प्राचीन साहित्य तक सीमित नहीं रहा बल्कि आधुनिक हिंदी साहित्य में भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।आधुनिक काल में डॉ.हजारी प्रसाद द्विवेदी प्रकृति के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहते हैं कि, -" यह धरती मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूं इसलिए मैं सदैव इसका सम्मान करता हूँ।और मेरी धरती माता के प्रति नतमस्तक हूँ"[4]

आधुनिक युग में मनुष्य ने विज्ञान विकास तकनीक के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति की है। फिर भी हिंदी साहित्य में प्रकृति और पर्यावरण के महत्व को कभी बुलाया नहीं गया है। भारतीय कवियों का प्रकृति से गहरा और आत्मीय संबंध रहा है कवियों और चिंतकों ने प्रकृति के विविध रूपों का सूक्ष्म अध्ययन करके उनके महत्व को स्पष्ट किया है।

निष्कर्ष :

समकालीन साहित्य में भी पर्यावरण से जुड़ी वास्तविकताओं को संवेदनात्मक और विचारात्मक स्तर पर प्रस्तुत किया गया है। इस संदर्भ में पर्यावरणीय विमर्श ने मनुष्य को प्रकृति के महत्व को समझने की प्रेरणा दी है। नदियों की स्वाभाविक सुंदरता, पेड़ों के बीच बहने वाली शीतल हवाओं की मधुर आहट और पक्षियों के कलरव जैसे

प्राकृतिक तत्व मानव जीवन में सौंदर्य और शांति का अनुभव कराते हैं। इन प्राकृतिक अनुभूतियों के माध्यम से मनुष्य और प्रकृति के गहरे संबंध को समझने का प्रयास किया गया है।हिंदी साहित्य के विभिन्न कालों में प्रकृति और पर्यावरण को विशेष महत्व दिया गया है। भारतीय संस्कृति और जीवन-मूल्यों से जुड़े अनेक ग्रंथों में केवल मानव जीवन ही नहीं, बल्कि जीव-जंतुओं, वनस्पतियों और प्रकृति के प्रति भी गहरी संवेदना व्यक्त की गई है। इन रचनाओं में प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाए रखने की प्रेरणा मिलती है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. डॉ. राधावल्लभ उपाध्याय, 'पर्यावरण शिक्षा', अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा। पृष्ठ सं 13
2. अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, 'प्रियप्रवास', साहित्य सागर प्रकाशन, जयपुर। पृष्ठ सं. 114
3. सुमित्रानंदन पंत, 'पल्लव', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 25
4. डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी, 'कुटज', (निबंध), पृष्ठ सं. 32